eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य साहित्य का विश्लेषण

[1]डॉ0 प्रियंका रानी
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर

Abstract

श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य साहित्य भारतीय समाज की जटिलताओं और विरोधाभासों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन की सजीवता, राजनीतिक भ्रष्टाचार की आलोचना, और सामाजिक ढांचे की परतों का विश्लेषण मिलता है। राग दरबारी जैसे उपन्यास में उन्होंने शिक्षा, प्रशासन, और समाज के अन्य पहलुओं की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा शैली में देशज मुहावरों और लोकप्रचलित शब्दों का प्रयोग उनकी रचनाओं को और अधिक प्रभावशाली बनाता है। यह शोधपत्र उनके व्यंग्य साहित्य की विशेषताओं, भाषा शैली, और सामाजिक संदर्भों का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड्स– श्रीलाल शुक्ल, व्यंग्य साहित्य, राग दरबारी, ग्रामीण जीवन, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक विडंबना, हिंदी उपन्यास, भाषा शैली

Introduction

श्रीलाल शुक्ल हिंदी साहित्य की उस परंपरा के लेखक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय समाज की जटिलताओं और विडंबनाओं का अनूठा और व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया। उनका लेखन मात्र मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि एक गहन सामाजिक और राजनीतिक विमर्श है, जो हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गंभीर विषयों की ओर संकेत करता है। उनके साहित्य में भारतीय समाज की सामजिक, आर्थिक, और राजनीतिक विसंगतियाँ प्रमुखता से उभरती हैं। श्रीलाल शुक्ल का जन्म 31 दिसंबर 1925 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के अतरौली ग्राम में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की और भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी कार्य किया। उनकी प्रशासनिक दृष्टि ने उनके व्यंग्य साहित्य को और भी पैना और यथार्थपरक बना दिया। व्यंग्य साहित्य में उनकी लेखनी ने एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने न केवल ग्रामीण भारत की समस्याओं और विसंगतियों को उजागर किया बल्कि शहरी जीवन, राजनीति, नौकरशाही, और सामाजिक ढांचों की परतों को भी व्यंग्य के माध्यम से उधेड़ा। उनका सबसे चर्चित उपन्यास श्राग दरबारीश 1968 में प्रकाशित हुआ, जो आज भी हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा की एक कालजयी कृति मानी जाती है। इस उपन्यास में उन्होंने ग्रामीण जीवन की विसंगतियों, शिक्षा व्यवस्था की खामियों, और प्रशासनिक भ्रष्टाचार का सजीव चित्रण किया।

श्रीलाल शुक्ल का साहित्यिक अवदान केवल राग दरबारी तक सीमित नहीं है। उनकी अन्य रचनाएँ जैसे विश्रामपुर का संत, अंगद का पाँव, श्यह घर मेरा नहीं, और सूनी घाटी का सूरजश भी उनकी व्यंग्य शैली और सामाजिक यथार्थबोध का परिचायक हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त ढोंग, भ्रष्टाचार, और पाखंड को उजागर करते हुए साहित्य को समाज परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बनाया। उनकी भाषा शैली में सहजता, प्रवाह, और देशज शब्दों का प्रयोग उनके साहित्य को आम जनमानस के करीब ले आता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

उनके लेखन में हास्य और व्यंग्य के साथ–साथ करुणा और संवेदना का भी अद्भुत समावेश मिलता है, जिससे पाठक हँसते–हँसते समाज की कड़वी सच्चाइयों को पहचानने लगते हैं। इस शोधपत्र में श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य साहित्य का व्यापक और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें उनके साहित्य में व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों, भाषा शैली, पात्रों, और उनके दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही श्राग दरबारीश जैसे कालजयी उपन्यास के विशेष विश्लेषण के माध्यम से यह शोधपत्र श्रीलाल शुक्ल के साहित्यिक योगदान और हिंदी व्यंग्य साहित्य में उनके स्थान को रेखांकित करता है।

श्रीलाल शुक्ल का साहित्यिक योगदान– श्रीलाल शुक्ल हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा के ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का जीवंत और मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया। उनका साहित्यिक योगदान बहुआयामी है और इसमें हास्य, व्यंग्य, समाजसुधार की चेतना, और गहरी संवेदनशीलता का अद्भुत समन्वय है। उनका लेखन हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा देने वाला और व्यंग्य को एक गंभीर साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला है।

1. व्यंग्य साहित्य में नवाचार– श्रीलाल शुक्ल ने हिंदी व्यंग्य साहित्य को एक नई पहचान दी। उन्होंने व्यंग्य को केवल हँसी और मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, और मानवीय कमजोरियों का उद्घाटन करने वाला सशक्त माध्यम बनाया। उनके व्यंग्य में हास्य के पीछे एक गहरी करुणा और समाज के प्रति एक जागरूक दृष्टिकोण छिपा है।

2. प्रमुख कृतियाँ– श्रीलाल शुक्ल की रचनाएँ साहित्य के विविध आयामों को समेटे हुए हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं–

राग दरबारी (1968), यह उनका सबसे चर्चित और कालजयी उपन्यास है। इसमें उन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन की विडंबनाओं, शिक्षा व्यवस्था की खामियों, और नौकरशाही के भ्रष्टाचार का बेधड़क चित्रण किया। यह उपन्यास आज भी हिंदी साहित्य में व्यंग्य की मिसाल माना जाता है।

विश्रामपुर का संत (1977), इसमें भी समाज की विसंगतियों और राजनीति की चालाकियों को व्यंग्य के माध्यम से उकेरा गया है।

अंगद का पाँव (1986), इस उपन्यास में उन्होंने मानव जीवन की जटिलताओं और समाज के पाखंड को बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह घर मेरा नहीं (1979) और सूनी घाटी का सूरज (1997), इन रचनाओं में भी उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से चित्रित किया है।

3. भाषा और शैली– श्रीलाल शुक्ल की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और सहज है, जिसमें ग्रामीण जीवन की सुगंध और स्थानीय भाषा का पुट है। उनके व्यंग्य में पात्रों के संवाद अत्यंत प्रभावशाली होते हैं, जो पाठक को हँसाने के साथ–साथ सोचने पर मजबूर कर देते हैं। वे देशज शब्दावली का ऐसा प्रयोग करते हैं जो पात्रों और वातावरण को यथार्थता प्रदान करता है।

4. सामाजिक चेतना और यथार्थवाद– श्रीलाल शुक्ल का साहित्य सामाजिक यथार्थ का सजीव दस्तावेज है। उन्होंने अपने लेखन में भारतीय समाज की जटिलताओं, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, शिक्षा व्यवस्था की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

खामियों, और राजनीतिज्ञों की चालाकियों को उजागर किया। उनका लेखन समाज में व्याप्त विसंगतियों पर एक करारा व्यंग्य है।

5. व्यंग्य में गंभीरता और करुणा– श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य में केवल हास्य ही नहीं, बल्कि समाज के प्रति गहरी संवेदना और करुणा भी दिखाई देती है। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाया कि किस प्रकार आम आदमी भ्रष्ट व्यवस्था में पिसता है, और किस प्रकार उसकी समस्याएँ उपेक्षित रह जाती हैं।

6. साहित्यिक सम्मान और पुरस्कार– श्रीलाल शुक्ल को उनके उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1969) उपन्यास राग दरबारी के लिए प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त उन्हें जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, शरद जोशी सम्मान, व्यास सम्मान, और भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया।

7. व्यंग्य साहित्य को नई दिशा– श्रीलाल शुक्ल ने व्यंग्य को केवल हास्य और चुटकुलों तक सीमित रखने के स्थान पर उसे एक गंभीर साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनके लेखन में गहराई, सामाजिक यथार्थ, और मनुष्य की कमजोरियों और दुर्बलताओं का सजीव चित्रण मिलता है, जिससे उनका व्यंग्य साहित्य कालजयी बन गया है।

श्रीलाल शुक्ल का साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य को एक नई दृष्टि और गहराई प्रदान करने वाला है। उनके व्यंग्य साहित्य ने समाज की विसंगतियों को उजागर करते हुए पाठकों को न केवल हँसाया, बल्कि सोचने और समाज को बदलने की प्रेरणा भी दी। उनके लेखन ने यह प्रमाणित किया कि व्यंग्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली साहित्यिक विधा है, जो समाज के यथार्थ को उजागर करने और उसे सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

'राग दरबारी' का विश्लेषण–

श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित 'राग दरबारी' (1968) हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा की एक अद्वितीय और कालजयी रचना है। यह उपन्यास भारतीय ग्रामीण समाज की जटिलताओं, विसंगतियों और विरोधाभासों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इसमें हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड, और नैतिक पतन पर तीखी टिप्पणी की गई है।

1. कथानक– राग दरबारी की कथा शिवपालगंज नामक एक काल्पनिक गाँव पर आधारित है। गाँव की सत्ता पर वर्चस्व कायम करने वाले वैद्यजी और उनके समर्थकों की राजनीति इस उपन्यास की मुख्य धुरी है। कहानी का सूत्रधार रंगनाथ है, जो शहर से गाँव आता है और वहाँ की वास्तविकताओं से परिचित होता है। शिवपालगंज में शिक्षा व्यवस्था, पंचायत राजनीति, स्वास्थ्य सेवाएँ, और सामाजिक जीवन, सब कुछ भ्रष्टाचार और पाखंड में डूबा है। उपन्यास की कथा–धारा किसी केंद्रीय कथानक पर आधारित नहीं है, बल्कि यह गाँव के जीवन की विभिन्न घटनाओं और पात्रों के माध्यम से समाज का एक व्यापक और यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करती है।

2. पात्रों का विश्लेषण– वैद्यजी, शिवपालगंज के सर्वेसर्वा, जिनका प्रभावशाली व्यक्तित्व, चतुराई और अवसरवादिता उन्हें सत्ता का केंद्र बनाते हैं। वे शिक्षा समिति के अध्यक्ष हैं और विद्यालय को अपनी सत्ता बनाए रखने का माध्यम बना लेते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

वैद्यजी– वह सभी गांवों की राजनीति के पीछे का मास्टरमाइंड है अपने वाक्य तैयार करने और उसके शब्दों को चुनने में बहुत स्पष्ट, वैद्यजी भी आधिकारिक तौर पर स्थानीय कॉलेज के प्रबंधक हैं।

रुप्पन बाबू– वैद्यजी के छोटे बेटे और कॉलेज के छात्रों के नेता, रुप्पन बाबू पिछले कई सालों से 10 वीं कक्षा में रहे हैं, उसी कॉलेज में, जहां उनके पिता प्रबंधक हैं रुप्पन सक्रिय रूप से सभी गांवों की राजनीति में शामिल है और गांव समुदाय द्वारा उनके शानदार गणिता के कारण उनका सम्मान किया जाता है। उपन्यास के अंत में, उसके व्यवहार में एक क्रमिक परिवर्तन देखा जा सकता है।

बद्री पहलवान– रुप्पन बाबू के बड़े भाई बद्री अपने पिता की सहभागिता से दूर रहते हैं और खुद को शरीर–निर्माण के अभ्यास में व्यस्त रखते हैं तथा अपने आश्रय की देखभाल करते हैं।

रंगनाथ– इतिहास में एम.ए., रंगनाथ वैद्य जी के भतीजे हैं। वह लगभग 5–6 महीने के लिए छुट्टी पर शिवलगंज आ गया है।

छोटे पहलवान– गांव की राजनीति में एक सक्रिय पार्टनर बद्री अग्रवाल के एक, गांव की राजनीति में एक सक्रिय सहभागिता है और वैद्यजी द्वारा बुलाए गए बैठकों में लगातार सहभागिता है।

प्रिंसिपल साहिब– जैसा कि नाम का अर्थ है, प्रिंसिपल साहिब, छांमल विद्यालय इंटर कॉलेज का प्राचार्य है। कॉलेज में कर्मचारियों के अन्य सदस्यों के साथ उनका संबंध साजिश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जोगनाथ– स्थानीय गुंडे, लगभग हमेशा नशे में वह प्रत्येक 2 सिलेबल्स के बीच ष्एफष् ध्वनि डालने से एक अनूठी भाषा बोलता है।

सनीचर – असली नाम मंगलदास, लेकिन लोग उसे सनीचर कहते हैं। वह वैद्यजी का नौकर है और बाद में वैद्यजी द्वारा राजनीतिक रणनीति के उपयोग के साथ गांव की कठपुतली प्रधान (नेता) बनाया गया था।

लंगड़ – वह अस्थायी आम आदमी का प्रतिनिधि है जो भ्रष्ट व्यवस्था का शिकार होता है।

इन सभी पात्रों के माध्यम से श्रीलाल शुक्ल ने समाज के विभिन्न पहलुओं, सत्ता, शिक्षा, प्रशासन और नैतिक पतन को चित्रित किया है।

3. मुख्य विषयवस्तु और प्रतीकात्मकता– शिक्षा व्यवस्था की विडंबना, विद्यालय समिति का अध्यक्ष स्वयं वैद्यजी हैं, जिनका उद्देश्य शिक्षा नहीं बल्कि सत्ता की पकड़ मजबूत करना है। विद्यालय में शिक्षक अनुपस्थित रहते हैं, और परीक्षा प्रणाली भ्रष्टाचार से ग्रस्त है। पंचायती राजनीति, गाँव की राजनीति में व्यक्तिगत स्वार्थ, छल–कपट और सत्ता की लालसा प्रधान है। नैतिक पतन और पाखंड, समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास और पाखंड व्याप्त है। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों को छलने में लगा है। प्रशासनिक भ्रष्टाचार, गाँव की व्यवस्था में पुलिस और प्रशासन की मिलीभगत से भ्रष्टाचार पनपता है।

राग दरबारी का प्रतीकात्मक अर्थ, 'राग दरबारी' दरअसल दरबारी संगीत राग का प्रतीक है, जो दरबार में शासक की प्रशंसा में गाया जाता है। उपन्यास में यह प्रतीक सत्ता और चाटुकारिता की संस्कृति को इंगित करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

4. भाषा और शैली– श्रीलाल शुक्ल की भाषा सहज, प्रवाहमयी, और व्यंग्यपूर्ण है। ग्रामीण जीवन की बोली, देशज शब्दावली, और पात्रों के संवाद उपन्यास को यथार्थपूर्ण बनाते हैं। हास्य और व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने गहरी सामाजिक सच्चाइयों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है।

5. समकालीन संदर्भ और प्रासंगिकता– राग दरबारी केवल 1960–70 के दशक के भारतीय ग्रामीण जीवन का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। आज भी शिक्षा, प्रशासन, और राजनीति में जो भ्रष्टाचार और पाखंड व्याप्त है, उसकी तस्वीर राग दरबारी में देखी जा सकती है। यह उपन्यास एक ऐसे समाज का चित्रण करता है जहाँ सत्ता और स्वार्थ के आगे नैतिकता और ईमानदारी की कोई जगह नहीं होती।

राग दरबारी केवल एक उपन्यास नहीं बल्कि भारतीय ग्रामीण समाज का दर्पण है। इसमें श्रीलाल शुक्ल ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गंभीर सामाजिक समस्याओं पर प्रहार किया है। उपन्यास का अंत यह दिखाता है कि व्यवस्था इतनी जटिल और भ्रष्ट हो चुकी है कि उसे बदलना असंभव सा प्रतीत होता है। रंगनाथ का लौट जाना इस व्यवस्था के आगे मानव की विवशता को दर्शाता है।

निष्कर्ष– श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य साहित्य हिंदी साहित्य में एक अद्वितीय और सशक्त स्थान रखता है। उन्होंने समाज की विसंगतियों, राजनीतिक पाखंड, शिक्षा और प्रशासनिक भ्रष्टाचार, तथा नैतिक पतन को इतनी प्रभावशाली शैली में प्रस्तुत किया है कि उनके रचनात्मक योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनका व्यंग्य हास्य के पीछे छुपी गहरी करुणा और चिंता को व्यक्त करता है। विशेषकर राग दरबारी न केवल उनके लेखन का शिखर है, बल्कि यह उपन्यास आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भी है। इसमें शिवपालगंज नामक काल्पनिक गाँव के माध्यम से भारतीय ग्रामीण समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति और नैतिक मूल्यों का हास्यपूर्ण और करुणामय प्रस्तुतीकरण है।

श्रीलाल शुक्ल ने भाषा में सहजता, देशज शब्दावली, और पात्रों की जीवंतता को इस प्रकार पिरोया कि पाठक उस यथार्थ को न केवल पढ़ता है, बल्कि उसमें अपने आसपास के समाज की झलक भी देखता है। उनकी शैली में गहरा व्यंग्यबोध है, जो हास्य उत्पन्न करते हुए पाठक को सोचने पर मजबूर करता है। आज के संदर्भ में भी श्रीलाल शुक्ल का साहित्य उतना ही प्रासंगिक है। भ्रष्टाचार, शिक्षा की गिरती गुणवत्ता, प्रशासन की निष्क्रियता और राजनीतिक पाखंड जैसे मुद्दे आज भी हमारे समाज में व्याप्त हैं। राग दरबारी जैसी रचनाएँ हमें इन समस्याओं की गहराई और व्यापकता को समझने और उन पर विचार करने की प्रेरणा देती हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्रीलाल शुक्ल का व्यंग्य साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज की गहन आलोचना और आत्ममंथन का एक अद्भुत माध्यम है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल हास्य और व्यंग्य की कला को समृद्ध किया, बल्कि समाज को उसके वास्तविक और विकृत रूप से परिचित कराते हुए साहित्य को सामाजिक चेतना से जोड़ने का कार्य भी किया। उनकी रचनाएँ आने वाली पीढ़ियों को भी व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को समझने और सुधार की प्रेरणा देती रहेंगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 08, August 2022

सन्दर्भ सूची

1- शुक्ल, श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, 1968
2– शुक्ल, श्रीलाल, विश्रामपुर का संत, राजकमल प्रकाशन, 2002,
3– शुक्ल श्रीलाल, अगली शताब्दी के नाम, राजकमल प्रकाशन, 1998
4– शुक्ल, श्रीलाल, यह घर मेरा नहीं, राजकमल प्रकाशन, 1979
5– शुक्ल, श्रीलाल, मकान, राजकमल प्रकाशन, 1957
6– शुक्ल, श्रीलाल, सीधे–साधे किस्से, राजकमल प्रकाशन, 2006 ISBN: 978–8126714281
7– शुक्ल, श्रीलाल, सूनी घाटी का सूरज, राजकमल प्रकाशन, 1991
8– शुक्ल, श्रीलाल, बिसरामपुर का संत (व्यंग्य निबंध संग्रह) राजकमल प्रकाशन, 2001
9– शुक्ल, श्रीलाल, उमराव नगर में कुछ दिन, राजकमल प्रकाशन, 2000, ISBN: 978–8170284521
10– शुक्ल, श्रीलाल, श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य निबंध, अशोक चक्रधर, साहित्य अकादमी, 2005
11– कुमार, मधुकर, श्रीलाल शुक्ल एक अध्ययन, प्रकाशक, प्रकाशन संस्थान, 1999